

साक्षात्कार : वेना कपूर के साथ

वेना कपूर नेचर कंज़र्वेशन फ़ाउण्डेशन (NCF), बेंगलूरु के साथ प्रकृति शिक्षा और सार्वजनिक जुड़ाव पर काम करती हैं। प्राकृतिक दुनिया उन्हें काफ़ी आकर्षित करती और अपने इस उत्साह और अचरज को वे बच्चों व युवाओं तक पहुँचाने में आनन्द लेती हैं। उनके मन में मकड़ियों के लिए एक ख़ास जगह है और वे अकसर लोगों को मकड़ियाँ दिखाते ले जाती हैं।

आपकी वर्तमान भूमिका

नेचर कंज़र्वेशन फ़ाउण्डेशन में शिक्षा और सार्वजनिक जुड़ाव कार्यक्रम टीम के सदस्य के रूप में, मेरे काम का एक बड़ा हिस्सा प्रकृति शिक्षा, अनुसन्धान व प्रचार-प्रसार पर केन्द्रित है। हम प्राकृतिक दुनिया के प्रति बच्चों व युवाओं का उत्साह व दिलचस्पी बढ़ाने के लिए, शिक्षकों के साथ मिलकर प्राकृतिक व वन्यजीव सम्बन्धित संसाधनों का विकास करते हैं। हम नागरिक विज्ञान प्रयासों का उपयोग करते विभिन्न तबक़े के लोगों को जैव विविधता के बारे में वैज्ञानिक जानकारी जुटाने को प्रेरित करते हैं। इसके साथ ही, मैं विभिन्न संस्थानों के साथियों के साथ संरक्षण अनुसन्धान व कार्रवाई का काम करती हूँ और संरक्षण-सम्बन्धी विद्यार्थी सम्मेलनों, कार्यशालाओं और अन्य कार्यक्रम आयोजित करने में मदद करती हूँ। नेचर कंज़र्वेशन फ़ाउण्डेशन के कार्यकारी बोर्ड के एक सदस्य के रूप में, मैं

संगठन में दीर्घकालिक प्रक्रियाओं के निर्णय, नियोजन और क्रियान्वयन में मदद करती हूँ।

काम का एक सामान्य दिन

कोई दिन सामान्य दिन नहीं होता। हर दिन अलग होता है। अधिकांश दिनों में, मैं हमारे कार्यक्रमों के विभिन्न पहलुओं पर पढ़ती, लिखती, अनुसन्धान करती हूँ या सहयोगियों के साथ विचार-मन्थन करती हूँ। कुछ दिन हम सफ़र करते हैं – सम्भावित सहयोगियों, शिक्षकों और सहकर्मियों के साथ मुलाक़ात करने हेतु। फुरसत के दिन, आप हमें अपने कार्यालय की बालकनी से पक्षियों या पेड़ों को निहारते हुए देख सकते हैं। इसके साथ अकसर अवलोकनों पर गर्मागर्म चर्चाएँ चलती हैं।

आपके पेशे का पारितोषिक

प्राकृतिक दुनिया का निरीक्षण करने, रिकॉर्ड करने और समझने का अवसर – उन जीवों की अद्भुत विविधता जो हमारे आँगन,

जंगलों और दूर-सुदूर जगहों पर रहते हैं। इस क्षेत्र में कई वर्षों तक काम करने के बावजूद प्राकृतिक दुनिया के कई पहलू मुझे आज भी आश्चर्य और विस्मय से भर देते हैं।

इसके अलावा, यह भी तो है कि मैं खिड़की से बाहर निहारने का लुत्फ ले सकती हूँ और हमारे सामने घटती प्रकृति की लीला का दीदार कर सकती हूँ – वास्तव में, यह मेरे काम का ही एक हिस्सा है! खुशकिस्मती से, मेरा कार्यालय एक ऐसी जगह है जहाँ अभी भी काफ़ी खुली जगह और बहुत सारे पेड़ हैं। वास्तव में, मैं आपके इन सवालों का जवाब देते-देते अभी कम-से-कम तीन पक्षी प्रजातियों की आवाज़ सुन पा रही हूँ।

आपके पेशे के महत्वपूर्ण नैतिक पहलू

मुझे लगता है कि पशु और मानव कल्याण एक समान हैं और इसलिए मैं जो काम करती हूँ उसका यह एक महत्वपूर्ण नैतिक पहलू है। बेशक, इन विचारों के विशिष्ट रूप अकसर व्यक्तिगत पसन्द से प्रभावित होते हैं। उदाहरण के लिए, प्रजातियों का वर्गीकरण करने के लिए पारम्परिक रूप से

नमूनों के संग्रह की आवश्यकता रही है। इस आवश्यकता को लेकर असहजता के चलते ही मैंने वर्गीकरण विज्ञान में कैरियर बनाने से बचने का एक सचेत निर्णय लिया। क्रिस्मत से, अब हमने वर्गीकरण के कई प्रकार के साधन विकसित कर लिए हैं जो हमें इस आवश्यकता से परे जाने की इजाजत देते हैं। कभी-कभी हमारे नैतिक विचारों पर हमारे सहकर्मियों और संस्थानों (जिनमें हम काम करते हैं) का भी प्रभाव होता है। उदाहरण के लिए, नेचर कंज़र्वेशन फ़ाउण्डेशन में सभी अनुसन्धान परियोजनाएँ एक नैतिक समिति द्वारा सख्त समीक्षा प्रक्रिया से गुजरती हैं। इस समिति में संगठन के बाहर के कुछ सदस्य भी शामिल होते हैं।

शुरुआती अनुभव जिन्होंने विज्ञान में रुचि पैदा की

मैं भाग्यशाली थी कि मेरे स्कूल में खुली जगहें और कई बड़े-बड़े पेड़ थे और मेरे घर भी बगीचा और बहुत सारे पौधे थे। सहयोगी माता-पिता और दोस्तों के होने से भी बहुत मदद मिली। उदाहरण के लिए, मेरे माता-पिता ने साँपों के प्रति मेरे आकर्षण

को हतोत्साहित नहीं किया, भले ही वे उसे समझ नहीं पाते थे। वास्तव में, मैं कुछ जीवों को चुपके से घर में लाने में कामयाब रही, जिनमें एक-दो बचाए हुए साँप भी शामिल थे! काश, मेरे स्कूल लाइब्रेरी में और भी ढेर सारी किताबें होती। हमारे यहाँ जानवरों पर थोड़ी-सी ही किताबें थीं, जिन्हें मैं जल्द-से-जल्द पढ़ लेती। जॉय एडम्सन की 'बॉर्न फ्री' की एक प्रति पाकर अपना रोमांच मुझे आज भी याद है। मैं सातवीं कक्षा में थी, और इस मशहूर किताब में वन्य जीवन के विवरणों पर फ़िदा थी – अफ़्रीका के लोगों, शेरों और उसके भू-भागों के दृश्य मेरे मन में घूमते रहते थे। मुझे आज भी अपने शिक्षक के चेहरे का भाव याद है जब मैंने वही किताब दोबारा माँगी।

वैज्ञानिक बनने का निर्णय

मुझे पौधों और जानवरों से हमेशा से प्यार रहा है। जब मैं छोटी थी, तब परिवार के एक मित्र द्वारा भेजी गई बीबीसी वाइल्डलाइफ़ पत्रिका के हर अंक को पढ़ डालती थी। मैं दूरदर्शन पर आने वाले जैक कुस्टोव के समुद्री और पानी के अन्दर के जीवन



चित्र-1 : मेरा ज़्यादातर कार्य प्रकृति शिक्षा पर केन्द्रित है।

Credits: Jagat Flora. License: CC-BY-NC.

पर अनगिनत कार्यक्रम भी देखा करती थी। लेकिन, वास्तविक जीवन में मैं कभी किसी वन्यजीव विज्ञानी या संरक्षणवादी से नहीं मिली थी, तो मैंने सोचा कि इस क्षेत्र में कैरियर बनाना सम्भव ही नहीं है, खासकर भारत में। इसलिए, लम्बे समय तक, वन्यजीवों के लिए मेरा आकर्षण पुस्तकों, पत्रिकाओं और वृत्तचित्रों में मेरी रुचि तक सीमित रहा। फिर, एक दिन, मैंने बेंगलूरू स्थित एक संगठन द्वारा वन्यजीवों और संरक्षण के बारे में जागरूकता फैलाने के इच्छुक वालंटियरों के लिए एक विज्ञापन देखा। यह मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ था। मैं वाणिज्य विषय में एक स्नातक कार्यक्रम में पढ़ रही थी, लेकिन मैंने अपने ग्रीष्मकालीन अवकाश इस संगठन के साथ वालंटियर करते हुए बिताए।

मेरे काम का एक बड़ा हिस्सा स्कूलों और कॉलेजों में प्रकृति शिविरों, वार्ताओं और

प्रदर्शनों के माध्यम से बच्चों और किशोरों के साथ बातचीत करना था। उदाहरण के लिए, एक लाइव प्रदर्शन का उद्देश्य बच्चों को जहरीले और गैर-जहरीले साँपों के बीच अन्तर दिखाना था और उनके आस-पास के कुछ मिथकों का खण्डन करना था। इन प्रकृति शिविरों के माध्यम से ही मुझे बाहरी दुनिया में अपना पहला वास्तविक अनुभव मिला। जैसे-जैसे अपने जैसी रुचि रखने वाले लोगों से मेरा सम्पर्क बढ़ा, वैसे-वैसे भारतीय वन्यजीवों और संरक्षण के पेशे से परिचय भी बढ़ता गया। लगभग इसी समय मुझे गेराल्ड डुरेल, जेन गुडाल और सालिम अली के जीवन व अनुभवों के बारे उनकी अद्भुत किताबों से पता चला। उनकी स्वच्छन्द (और अकसर मनोरंजक) संरक्षण कथाओं और उनके आकर्षक कारनामों के विवरण, पढ़ते-पढ़ते वन्यजीव संरक्षण और पारिस्थितिकी को एक पेशे के रूप में

अपनाने का मेरा संकल्प और मजबूत हो गया।

वर्तमान कार्यक्षेत्र का चुनाव

मुझे लगता है कि मेरे जीवन ने एक चक्र पूरा कर लिया है! मैंने अपने सफर की शुरुआत बच्चों को प्रकृति शिविरों में ले जाते हुए की थी। मकड़ियों पर मेरे शोध को, काफी हद तक, चेन्नई में सेंटर फॉर इंडियन नॉलेज सिस्टम्स के डॉ. विजयलक्ष्मी और ए. वी. बालसुब्रमण्यम ने प्रेरित किया था, जिनके साथ मैंने स्नातक शिक्षा के बाद अपनी पहली नौकरी में काम किया था। उनके द्वारा एकत्रित मकड़ियों से सम्बन्धित और छवि प्रलेखनों ने मेरे लिए एक पूरी नई दुनिया ही खोल दी थी। साथ ही, उन्होंने मुझे पश्चिमी घाट के जंगलों में समय बिताने और वहाँ काम करने वाले वन्यजीव शोधकर्ताओं से मिलने को प्रोत्साहित किया ताकि मैं इस कार्यक्षेत्र का अनुभव ले सकूँ। यह पहला



(क)



(ख)



(ग)



(घ)



(ङ)

चित्र-2 : वन्यजीव वैज्ञानिक और संरक्षण वैज्ञानिकों के जीवन व उनकी दुनिया की खोज ने मुझे स्वयं जीव वैज्ञानिक बनने को प्रेरित किया।

(क) जॉय एडम्सन (ख) जैक्स केस्टू

(ग) गेराल्ड डुरेल (घ) जेन गुडाल

(ङ) सालिम अली

License: CC-BY-NC.



चित्र-3 : मेरा पहला काम पश्चिमी घाट की मकड़ियों पर शोध करना था।

Credits: Sara. License: Commissioned and copyright image used with permission.

अवसर था जब मैंने अनुभव किया और समझा कि पारिस्थितिक अनुसन्धान करने का क्या मतलब है।

मैं कुछ वर्षों के लिए पारिस्थितिकी और वन्यजीव संरक्षण अनुसन्धान और अभ्यास में तैरती-उतराती रही। इसमें शहरी वन्यजीवों के दस्तावेज़ीकरण की कोशिश करना और पश्चिमी घाट में दीर्घावधि वर्षावन बहाली कार्यक्रम के लिए वर्षावन बीजों और पौधों के लिए एक नर्सरी बनाने में मदद करना शामिल था। कुछ समय के लिए, मैंने नेचर कंज़र्वेशन फ़ाउण्डेशन के लिए धन जुटाने और संचालन में मदद की। मैंने बच्चों के लिए प्रकृति पर कुछ किताबों का सह-लेखन भी किया। शिक्षा क्षेत्र से लम्बे समय दूर रहने के बाद, दी रवि शंकरन इनलैक्स फ़ाउण्डेशन की एक पूर्ण छात्रवृत्ति

ने मुझे ब्रिटेन के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से संरक्षण नेतृत्व में एमफिल करने का मौक़ा दिया। इस पाठ्यक्रम ने मुझे वर्तमान संरक्षण अनुसन्धान और अभ्यास की तथा इस क्षेत्र की व्यापक समझ विकसित करने में मदद दी। अपनी थीसिस के हिस्से के रूप में, मैंने इस बात पर एक लघु शोध परियोजना की कि किस प्रकार संरक्षण संगठन भौगोलिक सह-स्थानिकता का उपयोग कर रहे थे ताकि उनके बीच सहयोग की सम्भावनाएँ बेहतर हो सकें। जब मैं नेचर कंज़र्वेशन फ़ाउण्डेशन से दोबारा जुड़ी, तो मुझे प्रकृति शिक्षा और सामुदायिक काम का पूर्णकालिक अवसर मिला। मुझे लगता है कि मुझे अपने कैरियर के दौरान कई भूमिकाएँ निभाने का अवसर मिला है, जिसके कारण मुझे लीक से हटकर सोचने व कई तरह के कौशल विकसित करने की क्षमता मिली।

‘वैज्ञानिक होने’ से जुड़ी ग़लतफ़हमियाँ

अकसर, ‘वैज्ञानिक’ शब्द से, बीकरों से घिरे हुए, सफ़ेद कोट पहने, चश्मिश व्यक्ति (आमतौर पर एक मर्द!) की छवि उभरती है। लेकिन, कई वैज्ञानिक प्रयोगशाला जैसी जगह से बाहर काम करते हैं। यह पारिस्थितिकी और संरक्षण विज्ञान जैसे क्षेत्रों में विशेष रूप से सच है, जहाँ हमारी प्रयोगशाला बाहर की दुनिया है! यहीं हमारे कई अवलोकन और खोजें होती हैं।

अलबत्ता, कुछ मामलों में जीव विज्ञानियों और पारिस्थितिकीविदों को ऐसी परिस्थितियाँ या प्रयोग पुनर्निर्मित करने पड़ते हैं जो किसी प्राकृतिक परिघटना की अनुकृति हों जिसका अवलोकन प्रकृति में करना मुश्किल या समयखर्ची हो। वैज्ञानिकों

EARLY BIRD NATURE DETECTIVES BINGO

GO OUTDOORS AND FIND ANY FOUR DOWN OR ACROSS AND SAY BINGO!

On the ground



Flying



Bird dropping



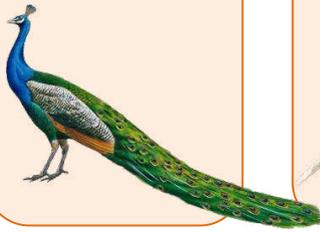
Two birds together



Bird with something
in its beak



Colourful bird



Feather



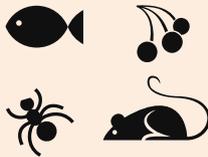
Bird with a long tail



Bird with long legs



Something a bird
could eat



Bird on a branch



Mostly black bird



Mostly white bird



On a wire or roof



Bird sound



Somewhere a bird
could hide



**nature
conservation
foundation**

Produced as part of a not-for-profit initiative to
introduce children to birds and nature.

Learn more about us at www.early-bird.in





के बारे में एक अन्य प्रचलित धारणा यह है कि उनके पास कई शैक्षणिक उपाधियाँ होती हैं। हालाँकि विज्ञान में औपचारिक प्रशिक्षण उपयोगी और महत्वपूर्ण है, लेकिन मुझे लगता है कि तार्किक सोच की योग्यता के साथ एक पूछताछ-आधारित दृष्टिकोण विज्ञान के अभ्यास के लिए अधिक आवश्यक होता है।

स्कूली विज्ञान शिक्षा पर परिप्रेक्ष्य

स्कूल में विज्ञान को कैसे समझा और सिखाया जाए, इसमें सम्पूर्ण कायापलट की ज़रूरत है। यह सही है कि इस मामले में अभी हमें एक लम्बा रास्ता तय करना है, लेकिन आजकल स्कूल की कक्षाओं में जिस तरह से विज्ञान पढ़ाया जाता है, उसमें मुझे छोटे-छोटे सकारात्मक परिवर्तन दिख रहे हैं। ये परिवर्तन काफ़ी हद तक कई संस्थानों और व्यक्तियों द्वारा विज्ञान शिक्षण में खुद करके सीखने व पूछताछ-आधारित दृष्टिकोण के

लिए किए जा रहे निरन्तर प्रयासों का नतीजा हैं। इन परिवर्तनों को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए, हमें और कई सारे लोगों को साथ लाने की आवश्यकता है – विशेषकर उन लोगों को जो शैक्षिक नीति तैयार करने में शामिल होते हैं।

शिक्षकों के लिए विज्ञान में रुचि को बढ़ाने के लिए सुझाव

बच्चों को उनकी पाठ्यपुस्तकों के अलावा अन्य पुस्तकें पढ़ने को प्रोत्साहित करें। पाठ्यक्रम के विषयों के आस-पास कक्षा अनुसन्धान आरम्भ करें और उन्हें उन अन्य संसाधनों की ओर इंगित करें जिनका वे उपयोग कर सकते हैं। विद्यार्थियों को हमेशा 'क्यों' प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करें ताकि वे स्वयं से, सहपाठियों और आपके साथ तर्क कर सकें। विज्ञान के सवालों और परिघटनाओं पर समूह में चर्चा को प्रोत्साहित करें। विद्यार्थियों को विषय

की अपनी समझ के आधार पर कहानियाँ मंचित करने के लिए कहें। विज्ञान शिक्षा पर व्यापक बातचीत करें। ऐसी एक बातचीत पाठ्यपुस्तकों और विज्ञान शिक्षण में लिंग, जाति और वर्ग का उचित प्रतिनिधित्व के मुद्दे पर हो सकती है। उदाहरण के लिए, आशिमा डोगरा और नन्दिता जयराज के 'दी लाइफ ऑफ साइंस' मंच पर देश भर की महिला वैज्ञानिकों की जीवन गाथाएँ हैं।

विज्ञान शिक्षा में अवलोकन और आश्चर्य की भूमिका

जिज्ञासा, आश्चर्य की भावना और निरीक्षण करने की उत्सुकता को प्रोत्साहित करना बच्चों के लिए प्राकृतिक दुनिया में रुचि विकसित करने का पहला कदम है। व्यापक शोध से पता चला है कि अधिगम परिणामों पर कक्षा से बाहर (आउटडोर) शिक्षण का सकारात्मक प्रभाव होता है। शिक्षक इन सिद्धान्तों को ध्यान में रखते हुए कक्षाओं



चित्र-4 : बच्चों को प्रकृति से जुड़ने का मौक़ा देना बहुत ज़रूरी है।

Credits: Vena Kapoor. License: CC-BY-NC.

पारिस्थितिकी और प्रकृति पर नेचर कंजर्वेशन फ़ाउण्डेशन के संसाधन जिन्हें शिक्षक कक्षा में और बाहर उपयोग कर सकते हैं :

1. 'हमारे आस-पास की प्रकृति' पर थीम आधारित बाहरी गतिविधियाँ : www.edu.ncf-india.org
2. भारत में आम पक्षियों के इर्द-गिर्द गतिविधियाँ और खेल : <http://www.early-bird.in/resources/>
3. एक पेड़ को गोद लें, मौसम बदलने पर उसके फूलने और फलने के पैटर्न को देखें और रिकॉर्ड करें : <http://www.seasonwatch.in/>
4. प्रकृति पर लेखों की एक शृंखला, बच्चों के लिए लिखी गई है जिसे कक्षा में पढ़ा जा सकता है, वैकल्पिक कहानियों के साथ अभिनय या संशोधित किया जा सकता है : <http://ncf-india.org/projects/writing-about-nature-for-children>

की योजना बना सकते हैं। वे इसके लिए पारिस्थितिकी और संरक्षण जैसे विज्ञान के विशिष्ट क्षेत्रों में कार्य कर रहे व्यक्तियों या संगठनों की भी मदद ले सकते हैं।

स्कूल विज्ञान में शोधकर्ताओं को जोड़ने का महत्त्व

यह अजीब लग सकता है, लेकिन मेरा विचार है कि शोधकर्ताओं के लिए, विशेष तौर से कैरियर के शुरुआती दिनों में, किसी-न-किसी रूप में स्कूल विज्ञान शिक्षण के साथ जुड़ना फ़ायदेमन्द हो सकता है। इस तरह के अनुभव, हो सके तो उनके संस्थानों की मदद से, विज्ञान के प्रति उनकी समझ को सन्दर्भ से जोड़ने की उनकी क्षमता विकसित करने में भी बहुत उपयोगी हो सकते हैं। शोधकर्ता उन संसाधनों को जुटाने में मदद कर सकते हैं जो स्कूल के शिक्षकों की पहुँच में शायद न हों – विशेष रूप से शोधकर्ताओं के कार्यक्षेत्रों में नवीनतम खोजें। कुछ नए और मध्य-अवस्था के शोधकर्ताओं को पाठ्यपुस्तक और शिक्षक प्रशिक्षण में होने वाले सरकारी परामर्श में जोड़ना भी मददगार हो सकता है।

स्कूली विज्ञान में पर्यावरण शिक्षा

स्कूली विज्ञान को पर्यावरण शिक्षा से ज़रूर जोड़ना चाहिए। सरकारों और स्कूल बोर्डों ने इस आवश्यकता को पहचानना शुरू कर दिया है। हाल के वर्षों में, प्राथमिक स्तर के स्कूल पाठ्यक्रम में पर्यावरण विज्ञान (ईवीएस) एक अनिवार्य घटक होता है।

हालाँकि यह बच्चों और किशोरों को पर्यावरण के मुद्दों के प्रति संवेदनशील बनाने की ज़रूरत को पहचानने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण क़दम है, लेकिन हममें से कई लोगों का मानना है कि जिस तरह से ईवीएस घटक को तैयार किया गया है और पढ़ाया जाता है उसने इसे एक अतिरिक्त बोझिल 'विषय' बना दिया है। ईवीएस की पाठ्यपुस्तकें प्रदूषण, वनों की कटाई, और ग्लोबल वार्मिंग जैसे मुद्दों को रेखांकित करती हैं जो विद्यार्थियों को बेबस महसूस करा सकती हैं। हमारा तर्क है कि इसके कारण बच्चों को प्रकृति और पर्यावरण से जोड़ना मुश्किल हो सकता है। आदर्श रूप से, पाठ्यक्रम ऐसा हो जिससे युवा विद्यार्थी अपने निकट परिवेश के साथ जुड़े व उसका अनुभव करें, उससे अचम्भित हों और प्रकृति के साथ एक जुड़ाव बनाने को प्रोत्साहित हों। और आदर्श रूप से जब बच्चा इस सम्बन्ध को पहचानना शुरू कर दे (आमतौर पर उच्च कक्षा में), तभी उसे अधिक जटिल परिप्रेक्ष्य और पर्यावरणीय मुद्दों से परिचित कराया जाना चाहिए।

प्रकृति और पर्यावरण शिक्षा पर सुझाव

अपनी कक्षा और स्कूल की लाइब्रेरी में भारत के पक्षियों, तितलियों, जानवरों और कीटों पर फ़ील्ड गाइड, पत्रिकाओं और प्राकृतिक इतिहास की पुस्तकों जैसे दिलचस्प संसाधन रखने की कोशिश करें। पारिस्थितिकी और संरक्षण शिक्षा जैसे क्षेत्रों

में काम करने वाले हममें से कुछ लोग ऐसी सामग्री और मॉड्यूल तैयार कर रहे हैं जिन्हें शिक्षक अपने विद्यार्थियों को पर्यावरण से जुड़ने व महसूस करने में मदद करने के लिए उपयोग में ले सकते हैं (उदाहरण के लिए गतिविधि वर्कशीट – प्रारम्भिक बर्ड नेचर डिटेक्टिव्स बिंगो देखें)। इन संसाधनों का उपयोग करें और अपने आस-पास के क्षेत्र के सन्दर्भ में संशोधित कर लें।

हमारे अनुभव में, स्कूल या कक्षा में एक पक्षी उपस्थिति रजिस्टर रखना बहुत सफल/ लोकप्रिय साबित हो सकता है! रोज़ाना, अपने विद्यार्थियों को उन पक्षियों की उपस्थिति दर्ज करने को कहें जो उन्होंने स्कूल परिसर में देखे हैं। उनके अवलोकनों के बारे में प्रश्न पूछें – जैसे पक्षी क्या कर रहे थे? वे एक विशेष तरीके के क्यों दिखते हैं? वे कैसे समूह/ झुण्ड बनाते हैं? विद्यार्थियों से हर महीने और वर्ष में एक बार अपने अवलोकनों की तुलना कराएँ। उन्हें केवल वर्ष के किसी विशेष समय में ही क्यों देखा जाता है? परिसर में दिखने वाले आम पक्षियों, कीटों, पेड़ों और फूलों के चित्रों की प्रदर्शनी लगाएँ। इससे विद्यार्थियों को अपने आस-पास के वातावरण और प्रकृति से जुड़ने में आसानी होती है। अपने सामने दिखने वाली चीज़ों को पहचानने में एक अलग ही रोमांच होता है!

याद रखें कि यदि आप पक्षी, पेड़ या कीट के वैज्ञानिक नाम को पहचान न पाएँ या याद न रख पाएँ तो घबराने की ज़रूरत नहीं है। अपने विद्यार्थियों को प्राकृतिक दुनिया का निरीक्षण करने के लिए प्रोत्साहित करें, उनके अवलोकनों को उन्हीं के शब्दों में वर्णन करने के लिए प्रोत्साहित करें और हो सके तो इन अवलोकनों को प्रकृति पत्रिका में दर्ज कराएँ। इस बात पर ज़ोर दें कि यह ज़रूरी नहीं है कि आप प्रजातियों के नाम सही ढंग से लिखें, बल्कि यह पूछना ज़रूरी है कि उन्हें वर्गीकृत और समूहीकृत क्यों और कैसे किया जाता है।



अनुवाद : सात्विका ओहरी पुनरीक्षण : सुशील जोशी कॉपी एडिटर : अनुज उपाध्याय